सर्वोच्च सत्ता

विश्व भर के कोने-कोने में की परमात्मा शिव की आराधना

दुनियाभर में है परमात्मा शिव की यादगार

केवल भारत ही नहीं विश्व के कोने-कोने में परमपिता शिव परमात्मा की यादगार मिलती है। चाहे चीन, मिस्र, जापान, यूनान सभी देशों में शिवलिंग की पूजा व ध्यान किसी न किसी रूप में किया गया है। वहीं भारतवर्ष में भी 12 ज्योतिर्लिंगम भी परमात्मा शिव की ही यादगार में स्थापित किए गए हैं। द्वाद्वश ज्योतिर्लिंग आज भी महान तीर्थ स्थान के रूप में माने जाते हैं। भारत के चारों कोनों में शिवलिंग की पूजा अवश्य ही होती है। उसके मंदिरों के जो नाम है वो भी गुणवाचक और कर्तव्यवाचक है। परमात्मा की महिमा के रूप में मंदिरों के नाम भी उसी अनुसार रखे हुए है। यदि जंगल को कलम और समुद्र को स्याही बना दिया जाए तो भी हम परमपिता परमात्मा की महिमा को लिख नहीं सकते हैं।

सोमनाथ

सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे, कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी जाती है। चाहे वह पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की मूर्तियां स्थापित न भी करें तो फिर भी पूजा-पाठ प्रार्थना इत्यादि अवसरों पर मंदिरों व धार्मिक स्थानों पर परमात्मा की स्मृति के रूप में दीपक अथवा ज्योति अवश्य जलाते हैं।

केदारनाथ

केदारनाथ ज्योतिर्लिंग उत्तराखंड में हिमालय की केदार चोटी पर स्थित है। इस ज्योतिर्लिंग का वर्णन शिव पुराण में भी मिलता है। सर्व के उद्धारकर्ता, भाग्य विधाता, सुखकर्ता होने के कारण ही उन्हें लोग नाथ अर्थात् स्वामी के नाम से भी पुकारते हैं। परमात्मा ही मुक्ति एवं जीवनमुक्ति की राह बताते है और इस धरा पर अवतरित होकर मनुष्य को राजयोग की शिक्षा देकर नर से नारायण और नारी से श्रीलक्ष्मी बनने की शिक्षा देते है।

भीमाशंकर

यह मंदिर महाराष्ट्र के सह्याद्रि पर्वत पर भीमा नदी के किनारे स्थित है। इस मंदिर में मूर्ति से निरंतर जल झरता रहता है। इसे मोटेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। जो मनुष्यात्मा परमात्मा के बताए मार्ग पर चलती और सच्चे मन से उन्हें याद करती है तो बदले में परमात्मा उसे 21 जन्मों की प्रालब्ध देते है। अत: परमपिता शिव परमात्मा ही सबके भाग्यविधाता और कल्याणकर्ता हैं।

मल्लिकार्जुन

यह ज्योतिर्लिंग आंध्रप्रदेश के कृष्णा नदी के तट पर श्री शैल नाम के पर्वत पर स्थित है। इसे दक्षिण के कैलाश के नाम से भी जाना जाता है। भारत के अनेक धार्मिक शास्त्र इसके धार्मिक और पौराणिक महत्व की व्याख्या करते हैं। कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने शिवानंद लहरी की रचना यही की थी। यह मंदिर भी ज्योतिबिन्दु परमपिता परमात्मा की स्मृति दिलाता हैं। जो परमात्मा का ही प्रतीक है।

ओंकारेश्वर

ओंकारेश्वर मध्य प्रदेश के ओंकारेश्वर में नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। जिस स्थान पर यह मंदिर है, उस पहाड़ी के चारों ओर नदी बहने के कारण यहां ऊँ आकार बनता है। इस कारण से इसका नाम ओंकारेश्वर पड़ा। इसी तरह हमारे वेदों-शास्त्रों में जो भी मंत्र लिखे हुए है, वह सभी ऊं से ही प्रारंभ होते हैं। इससे स्पष्ट है कि ऊं अर्थात् परमपिता परमात्मा ही इस सृष्टि के रचयिता त्रिमूर्ति हैं।

काशी विश्वनाथ

यह ज्योतिर्लिंग उत्तर प्रदेश के काशी नामक स्थान पर स्थित है। सभी धर्म स्थलों में काशी का सर्वाधिक महत्व है। यह शिवलिंग सबसे पुराने शिवलिंगों में से एक है। सारे विश्व का मालिक एक परमात्मा ही हैं। अत: विश्वपति अथवा विश्व का सृजनहार होने के कारण उसे विश्वनाथ के नाम से भी जाना जाता है।

त्र्यम्बकेश्वर

यह ज्योतिर्लिंग गोदावरी नदी के तट पर महाराष्ट्र राज्य के नासिक जिले में स्थित है। कहा जाता है कि त्रयम्बकेश्वर में ब्रह्मा, विष्णु और शंकर, शिवलिंग के रूप में समाहित हैं। इससे स्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा शिव तीनों देवों के भी देव रचयिता है और इनके द्वारा सृष्टि की स्थापना, पालना और विनाश का कार्य कराते हैं।

वैद्यनाथ

यह शिवलिंग झारखंड में देवघर के पास स्थित है। दुखों में ग्रस्त दुनिया को सुखमय बनाने और सर्व आत्माओं के दुख हरने के कारण परमात्मा को वैद्यनाथ के नाम से भी जाना जाता है। वह तो हम सभी आत्माओं की कुंडली जानते हैं और हमें दुखों से मुक्त कर अपने लोक ले जाते हैं।

नागेश्वर

यह ज्योतिर्लिंग गुजरात राज्य के द्वारिका में स्थित है। धर्म शास्त्रों के अनुसार भगवान शिव को नागों के देवता के रूप में भी माना गया है। इसलिए इस शिवलिंग का नाम नागेश्वर पड़ा। अर्थात् वह सर्व आत्माओं के सर्परूपी विषय विकारों, बुराइयों, कुसंस्कारों और अवगुणों को दूर कर पवित्र बनने की शिक्षा देते हैं।

रामेश्वर

यह ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु राज्य के रामनाथपुर नामक स्थान में स्थित है। यह स्थान चार धामों में से एक है। श्रीराम के द्वारा स्थापित होने के कारण इसे रामेश्वर के नाम से जाना जाता है। अर्थात् जो श्रीराम के भी ईश्वर है और जिसकी पूजा स्वयं श्रीरामचंद्र ने भी की थी। इससे स्पष्ट है कि देवों के भी देव महादेव शिव है।

घृष्णेश्वर

शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से यह अंतिम ज्योतिर्लिंग है। इस प्रकार हम देखते है कि पूरे भारत में शिव परमात्मा की यादगार के रूप में मंदिर बने हुए है। जो शिव को सर्वमान्य, सर्वोच्च बनाते हैं। यह मंदिर महाराष्ट्र के औरंगाबाद के समीप दौलताबाद में स्थित है। इसे घृष्णेश्वर या घुश्मेश्वर के नाम से भी जाना जाता है।

सबने की परमात्मा शिव की आराधना

श्रीराम के भी भगवान हैं 'शिव'

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। शिव श्री राम के भी भगवान हैं। अगर श्रीराम भगवान होते तो उन्हें पूजा करने की क्या आवश्यकता थी? क्योंकि वह जानते थे कि रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या, आराधना करके प्राप्त की थी। शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए

श्रीराम को भी शिव की शक्ति की आवश्यकता थी। इसलिए उन्होंने शिव की आराधना की।

युद्ध के पहले की परमात्मा शिव की पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर परमपिता शिव की पूजा-अर्चना की और पांडवों से भी करवाई। वह शिव से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। यह शिव की शक्ति का ही परिणाम था कि वह संख्या में कम होने के बाद भी उन्होंने कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की। शिव को

भोलेनाथ भी कहा गया है क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले है।

तपस्या से विनाश ज्वाला प्रकट हुई

शंकर को सदा ध्यान की अवस्था में दिखाया जाता है। इससे स्पष्ट है कि उनके भी कोई आराध्य हैं ? जिनका वे निरंतर एकाग्रचित्ता होकर स्मरण करते है। उनके संबंध में यह भी कहा जाता है कि तीसरा नेत्र खुलते ही विनाश ज्वाला प्रकट होती है। यह तपस्या द्वारा परमात्मा से प्राप्त शक्ति का परिणाम है कि यह शक्ति उनके

नेत्रों से दिखाई देती है।

अल्लाह को कहा नूर

मुस्लिम धर्म में लोग मानते है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा एवं पवित्र पत्थर का दर्शन अवश्य करना चाहिए। इससे खुदा उन्हें जन्नत में स्थान देता है। उस पत्थर की कोई साकार आकृति नहीं है अर्थात् वो निराकार है। जिसे संग-ए-असवद के नाम से जाना जाता है। अर्थात् उसे ही अल्लाह, नूर-ए-इलाही, खुदा कहते है। उस तेजोमय स्वरूप को जिसे हिन्दू धर्म में ज्योतिर्लिंगम कहा गया। जो ज्योति का प्रतीक है। ज्योति माना ही तेज। इसलिए मुसलमान जब भी नमाज पढ़ते है तो मक्का की दिशा

में पढ़ते हैं। मुसलमानों ने अल्लाह, नूर-ए-इलाही कहकर उस निराकार, परमसत्ता को ही याद किया। अत: इससे स्पष्ट है कि सभी धर्मों ने किसी न किसी रूप में उस परमसत्ता, सर्वशक्तिमान की सत्ता को ही स्वीकारा है।

ज्योति के रूप में 'शिव' की साधना

परमात्मा देवों के भी देव महादेव हैं। जिसकी पूजा सभी देवताओं ने की। भारत के अंदर देखा जाए तो हर राज्य में अलग-अलग देवताओं की पूजा की जाती है। नार्थ में श्रीराम और श्रीकृष्ण की पूजा, दक्षिण में श्री व्यंकटेश्वर या श्री बालाजी अर्थात् विष्णु की पूजा होती है। ईस्ट में काली एवं दुर्गा की पूजा, वेस्ट में श्रीगणेश की पूजा होती है। लेकिन शिव की पूजा सारे भारत भर में होती है।

धर्मस्थापकों ने भी की ज्योति की आराधना

जीसस ने भी गॉड को लाइट कहा है। गॉड इज लाइट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। जीसस ने यह कभी नहीं कहा, आई एम गॉड। उन्होंने भी उस लाइट को परमात्मा का स्वरूप बताया। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया है कि जब हजरत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही हजरत मूसा ने कहा- जेहोवा।

चर्च में जाएंगे तो वहां पर हमें मोमबत्तियां मिलती हैं। उसमें भी एक बड़ी मोमबत्ती होती है। बाकी सब छोटी मोमबत्तियां होती है। बड़ी मोमबत्ती परमात्मा का प्रतीक है। छोटी मोमबत्तियां आत्माओं का प्रतीक है।

अग्यारी में ज्योति करते स्थापन

पारसियों के अग्यारी में होली फायर मिलता है। पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर आए। आज भी जब नई अग्यारी की स्थापना होती है तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा स्थापित किया जाता है। जो सदा जलती आई थी, जो सदा अखंड है , जो परमात्मा का दिव्य स्वरूप है।

मिस्र में भी शिव की यादगार

मिस्र में शिव की पूजा सेवा नाम से होती थी। फैजी देश में शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' नाम से पूजते है। शिवलिंग के साथ बैल की मूर्ति भी रखी जाती है। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहा जाता है। तो वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के पति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

यूनान में भी होती शिव की पूजा

यूनान में शिवलिंग को 'फल्लुस' कहा जाता है। शिवलिंग की पूजा उनके धर्म का प्रधान अंग थी। शिवलिंग के पास ही वे बैल की मूर्ति स्थापित किया करते थे। जिसे सभी देशों में धर्म का सूचक माना जाता रहा है। स्याम थाइलैंड में भी एकोनिस और ऐस्टररिग्स एवं यहूदियों के यहां शिवलिंग को बेलफेगो कहते हैं। ये लोग शिवलिंग की स्थापना करके बाल नाम से पूजते है। भारत में भी शिवलिंग के अनेक मंदिर बालेश्वर के नाम से है। ये शिवलिंग को सत्य स्वरूप परमात्मा की प्रतिमा मानने के कारण उसके सामने नेम अथवा शपथ लेते थे।

चिंकोनसेंकी को मानते परमात्मा का स्वरूप

जापान में तीन फीट की ऊंचाई और तीन फीट की दूरी पर एक थाली में लाल पत्थर रख कर ध्यान करते है। जो शिकोनिजम सेक्ट वाले हैं वो इस पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। इसे चिंकोनसेंकी कहा जाता है। जिसका अर्थ होता है शांति का दाता। उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं।

चीन में भी होती शिवलिंग की पूजा

चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। फ्रांस में गिरजाघरों में तथा अजायबघरों में लिंग रूप के पत्थर आज भी स्मारक रूप में देखे जाते है। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। इससे स्पष्ट होता है कि विश्व के हर देश में किसी न किसी नाम से शिव की ही पूजा की जाती है।

ऋषियों ने भी ली शिव से शक्ति

वेदों-पुराणों में भी शिव के अवतरण की बात कही गई है। शिवपुराण के कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है कि परमात्मा शिव ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होंगे। और शिव ने ब्रह्मा मुख द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना की।

मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिवपुराण के धर्मसंहिता में लिखा है कि कलियुग के अंत में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ। इस तरह हम देखते हैं कि भारत के सभी वेद-ग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात कहीं गई है।

देखा जाए तो सिर्फ भारत के धर्म ग्रंथों में ही नहीं बल्कि यहूदी, ईसाई, मुसलमानों की पुरानी धर्म पुस्तक तोरेत का आरंभ भी ऐसे ही होता है। परमात्मा ने ही आदम एवं हवा को बनाया जिनके द्वारा स्वर्ग रचा।

महाभारत में भी लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह नए युग की स्थापना के निमित्त बनी और उसने प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।

एक ओंकार निराकार, निर्वैर: गुरुनानक

सिक्ख धर्म में गुरुनानक देव ने कहा है एक ओंकार निराकार। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम् है जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्यनाम कहा। बात तो एक की ही है।

परमात्मा ने मां बाप की तरह पालना की

मैं बाबा के संग और बाबा मेरे संग हमेशा रहता है। हमारे हर सांस में बाबा बसा है। शिवबाबा ने हमें अपना बना लिया और आज अपने सेवा का महान कार्य करा रहा है। परमात्मा ने हमारी पालना बिल्कुल मां-बाप समान की है। बाबा हमेशा हम लोगों को ठाकुर कहकर पुकारते थे। हमें यह लगता ही नहीं कि हम परमात्मा के साथ रह रहे हैं, क्योंकि परमात्मा ने बिल्कुल मां-बाप जैसी हमारी पालना की। परमात्मा के साथ हमारा पूरा जीवन सफल हो गया। मनुष्यात्माएं सभी परमात्मा के बच्चे हैं और सभी को परमात्मा से आकर अपना वर्सा लेना चाहिए। क्योंकि समय बहुत तेजी से बीत रहा है। समय निकल जाने के बाद तो कुछ नहीं बचेगा।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

माउण्ट आबू साधकों की साधना स्थली

ब्रह्माकुमारीज़ माउण्ट आबू साधकों की साधना स्थली है। यहां के लोगों की तपस्या को देखकर हमारे अंदर का मैं समाप्त हो गया। मेरी अंतरचेतना में यहां के शब्द घूम रहे हैं। इससे मेरे अंदर एक बड़ा परिवर्तन आया। आज सारा देश आतंक और भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है और यह यहां की साधना की शक्ति से ही समाप्त होगा। यहां के लोगों में रचनात्मकता छुपी हुई है।

स्वामी ब्रह्मदेव, ट्रिनिडाड

परमात्मा से मिलने के बाद नहीं रहा कोई संशय

मैं जब माउण्ट आबू पहुंची तो पहले मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि क्या भगवान इतनी सरलता से मिल सकता है, लेकिन जब मैं उनसे मिली तो मन में कोई संशय ही नहीं रहा। परमात्मा से मिलन मनाने पर मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे पूरे शरीर में शक्तिशाली करंट प्रवाहित हो रहा हो। यह इतना सुखद आश्चर्य था जिसका वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकती हूं। उसके पश्चात हमारे संस्कारों में परिवर्तन आना शुरू हो गया और मन में यह संकल्प आया कि भगवान इस धरती पर आया हुआ है यह संदेश सभी को मिलना चाहिए।

डॉ. शुभदा नील, एमडी, गायकोनालॉजिस्ट, पनवेल-नवी मुम्बई

परमात्मा देते सच्चा ज्ञान

हम अपने अनुभव से कह सकते हैं कि भगवान स्वयं इस धरा पर आते हैं और ब्रह्मा द्वारा सतयुग की स्थापना का कार्य करा रहे हैं। हम भगवान की याद में मन, बुद्धि को एकाग्र कर लें तो हमें परमात्मा की शक्तियों की अनुभूति होने लगती है। परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। अब तो स्वर्णिम युग का समय भी समीप आ रहा है। इस संस्था में जो सत्य ज्ञान दिया जा रहा है वह किसी व्यक्ति का नहीं हो सकता। एक परमात्मा ही इस ज्ञान को दे सकते हैं।

कृष्ण कुमार चौधरी, चार्टर्ड एकांउटेंट, मुजफ्फरपुर, बिहार

देह अभिमान के कारण ईश्वर से दूर हो गए

आज मनुष्य देह अभिमानी हो गया है। वह ईश्वर से मिलन मनाना चाहता है, ईश्वर को पाना चाहता है परन्तु हमेशा उससे दूर ही रहता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में आत्म अभिमानी स्थिति ने मुझे प्रभावित किया। इस ज्ञान के बाद कई समस्याओं का समाधान सहज ही हो जाता है। जरूरत है कि वर्तमान समय मनुष्य अपने आपको जाने, सोचे, समझे और ईश्वरीय शक्ति का अनुभव करें।

रामनाथ मुखीजा, सलाहकार, कार्यकारी चेयरमैन समूह, एलएंडटी, मुम्बई

परमात्मा से संबंध जोड़ने का सर्वोत्तम साधन

राजयोग परमात्मा के साथ सीधे संबंध जोड़ने का सर्वोत्तम साधन है। यह ईश्वरीय ज्ञान सरल, सुखमय, तनावमुक्त जीवन जीने के लिए और परमात्म प्राप्ति का सही रास्ता है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आत्मा-परमात्मा का जो सत्य ज्ञान दिया जाता है। उसको जाानने और समझने के बाद जीवन में स्वत: ही परिवर्तन आने लगता है।

सौम्य टंडन, प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री

ईश्वरीय मिलन से बदल जाती जिंदगी

परमात्मा से मिलन की घड़ी जीवन की अमूल्य घड़ी है। परमात्मा के सम्मुख होने से दिव्य अनुभूति होने लगती है। इसके साथ ही आन्तरिक बदलाव भी होने लगता है। ब्रह्माकुमारीज़ में आत्मा-परमात्मा का जो ज्ञान दिया जा रहा है वह बिल्कुल नया और मनुष्य के लिए कल्याणकारी है। बिना मूल्य के हमारा जीवन श्रेष्ठ नहीं बन सकता। परमात्मा संगमयुग पर नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे है। मैंने अपने अनुभव से महसूस किया है। मैं भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे परमपिता शिव परमात्मा से मिलन मनाने का अवसर मिलता है। यहां दिया जा रही ज्ञान प्रत्येक रीति से सत्य एवं स्पष्ट है। यहां की शिक्षा का मूलमंत्र है स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा।

सोमनाथ पाटिल, वरिष्ठ पत्रकार, मुम्बई

भगवान से मिलन मनाता हूं

राजयोग का गहन अभ्यास करने के पश्चात अब मैं यह कह सकता हूं कि मैं प्रतिदिन अमृतवेले भगवान से मिलन मनाता हूं। मैं भगवान से मिलने के लिए कई साधु-महात्माओं के पास गया लेकिन किसी ने मुझे भगवान से मिलने का रास्ता नहीं बताया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने मुझे परमात्मा से मिलने का रास्ता बताया, जिस राह पर चलकर मैं आज प्रतिदिन भगवान से मिलन मनाता हूं और ऐसा अनुभव होता है जैसे भगवान स्वयं हमारे साथ है। यहां जो शिक्षा दी जा रही है वह परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान है। इसके लिए मैं ब्रह्माकुमारी संस्था को धन्यवाद देता हूं।

वीएम. अराध्या, जिला न्यायाधीश, मंडया, कर्नाटक